हिंदी के बौद्ध साहित्य का सामाजिक पक्ष

भगवान बुद्ध की शिक्षाओं का मुख्य उद्देश्य मानव जीवन को सुखमय बनाना था मानव ही उनके शिक्षाओं का केंद्र बिंदु था। मनुष्य का कल्याण, समाज में समानता, भाईचारा, प्रेम और सौहार्द, शांति ही बुद्ध धम्म का उपदेश रहा है। बुद्ध ने देखा कि लोग किसी न किसी कारण दुखी थे जिससे समाज और देश भी दुखी हो रहा था जबतक व्यक्ति प्रसन्न नहीं होगा, समाज देश या विश्व का विकास नहीं हो सकता : क्योंकि समाज की इकाई तो मनुष्य ही है। इसीलिए कहा जाता है कि–

''धम्म मनुष्य के लिए है

मनुष्य धम्म के लिए नहीं है''

गौतम बुद्ध के पहले वैदिक व्यवस्था में स्त्रियों को बराबरी का अधिकार नहीं था उनको यज्ञोपवीत का भी अधिकार नहीं था स्त्रियों को केवल भोग–विलास की वस्तु समझा जाता था और उनके लिए धार्मिक कार्य निषिद्ध थे। ऐसे में गौतम बुद्ध ने उनको बराबरी का दर्जा देकर समाज में स्त्रियों को अपना महत्व अनुभव कराया। जिससे स्त्रियों में सामाजिक दृष्टिकोण के प्रति परिवर्तन आया। बुद्ध ने स्त्री शिक्षा और राजनैतिक जागरूकता पर भी बल दिया। महिलाओं को भिक्खुणी बनने का अधिकार देकर सामाजिक और धार्मिक क्रांति लाई। भिक्षुणी संघ में दीक्षित होने का मौका मिलते ही अनगिनत स्त्रियाँ भिक्खुणी बनी। उन्होंने कला–संस्कृति और साहित्य के क्षेत्र में अभूतपूर्व प्रगति हासिल की, ''थोरी गाथा'' भिक्खुणियों ने ही लिखी। यह नारी स्वतंत्रता को प्रकट करने वाला प्रथम ग्रंथ है।

इस प्रकार बुद्ध ने दुनिया के इतिहास में पहली बार एक पृथक और स्वतंत्र भिक्खुणी संघ की स्थापना की। स्त्रियों को समानता दिलाने वाले भगवान बुद्ध विश्व के पहले गुरु बने।

गौतम बुद्ध ने जिस सामाजिक संरचना की परिकल्पना की थी, भिक्खु संघ उसका एक आदर्श नमूना था। यह भिक्खु संघ प9ूरी तरह प्रजातंत्रिक था। बुद्ध ने

संघ के लिए जो नियम बनाये खुद भी उसका पालन किया। उनके नियमों का पालन पंचशील और अष्टशील, भिक्खु–भिक्खुणी और गृहस्थ उपासक–उपासिकाएँ ने भी किया। ब्रिटेन में प्रजातंत्र आने से पूर्व ही बुद्ध ने भिक्खु और भिक्खुणी संघ में प्रजातंत्र की प्रणाली लागू कर दी थी। संघ की भाषा इस बात का उदाहरण है। गौतम बुद्ध चौदह भाषाओं के दक्ष होने पर भी उन्होंने सारे उपदेश उस समय की लोक भाषा पालि में ही दिए। जिससे आम जनता धम्मा को समझे और उसका पालन कर सके।

गौतम बुद्ध की शिक्षाओं को केंद्र में जातिगत भेद भाव को मिटाकर सामाजिक समानता स्थापना करना था। बुद्ध के अनुसार जन्म से न कोई ब्राह्मण होता है और न कोई शूद्र। मनुष्य का मूल्य उसकी जाति से नहीं उसके कर्मों से आंका जाता था। उनका कहान था कि कर्म से ही इंसान ब्राह्मण और शूद्र बनता है। बुद्ध के समानता सिद्धांत के कारण लोगों में स्वाभिमान और आत्मसम्मान बढ़ता गया और भौतिक जीवन जीने की प्रेरणा मिलती गयी जो कि हर मनुष्य की मूलभूत आवश्यकता है। इस प्रकार बुद्ध ने जातिगत भेद–भाव का पूरी तरह खंडन किया।

बुद्ध सामाजिक एवं पारिवारिक मूल्यों को घटते हुए देख यह उपदेश देते है कि धम्मा में छः दिशायें होती है। जिसमें पूरब का अर्थ माता–पिता, दक्षिण का गुरु–शिक्षण, पश्चिम का पति–पत्नि, उत्तर का मित्र और समाज धरती का कर्मचारी और आकाश का अर्थ साधु– संत है। उनका कहना था कि यदि मनुष्य इन छः दिशाओं की पूजा अथार्थ इन छः प्रकार के संबंधों का अनुकरण करेगा तब परिवार के लोगों में आपसी संबंध बढ़ेंगे। मित्र और अतिथियों का उचित सादर सत्कार होगा, और लोगों के आपसी सामाजिक संबंध में सुधार आयेगी। तब वह अपना गृहस्थ और पारिवारिक जीवन सुखी बना सकता है।

बौद्ध धम्म पूर्णतः वैज्ञानिक पर आधारित धर्म है। जिसमें रूढ़िवाद एवं अंधविश्वास के लिए कोई स्थान नहीं है। वे कहते हैं कि उनकी शिक्षाएँ न तो दर्शनशास्त्र है ना ही सिद्धांत ना ही कल्पना है उनकी शिक्षा में प्रत्यक्ष अनुभव का

प्रमाण है। जहाँ प्रमाणिकता के बिना कुछ भी स्वीकार्य नहीं। परंतु समाज में कई ऐसे धर्म है जो मनुष्य को रूढ़ियों और अंधविश्वासों में जकड़कर रखा था।

इन अंधविश्वासों एवं रूढ़ियों का खंडन करते हुए बुद्ध ने कहा कि धर्म की धुरी ''ईश्वर और मनुष्य का संबंध नहीं, बल्कि मनुष्य का मुनष्य के साथ संबंध है।'' बुद्ध ने ईश्वर को कभी सृष्टिकर्ता के रूप में स्वीकार नहीं किया, वे कहते थे कि ईश्वर मात्र एक कल्पना है, तथागत का मानना था कि प्रार्थना ने पुरोहित को जन्म दिया और पुरोहित ने अंधविश्वासों और रूढ़ियों को जन्म दिया जिसके कारण समाज अंधविश्वासों में डूबा हुआ था। यही कारण था कि वे रीति–रिवाजों, अंधविश्वासों के सख्त विरोधी थे।

संपूर्ण विश्व में हिंसा, डर और आतंक का वातावरण छाया हुआ था। विज्ञान का भीषण नरसंहारक हथियार बनाने में दुरूप्योग किया गया था। पूरी मानव जाति विनाश के कगार पर खड़ी हुई थी। ऐसे में बुद्ध की शिक्षाएँ पहले से भी ज्यादा प्रासंगिक हो गई थी। वे कहते थे कि–

''बैर से बैर कभी शांत नहीं होता, अबैर से ही बैर शांत होता है, यही संसार का नियम है''

अर्थात एक आदमी युद्ध में लाखों आदमियों से जीत कर शांत नहीं होता, दूसरा अपने आप को जीतकर शांत होता है। अर्थात दूसरों को जीतने की अपेक्षा में अपने आप को जीतना श्रेष्ठ है। भगवान बुद्ध का यह उपदेश विश्व में शांति बनाए रखने के लिए अति आवश्यक है।

बुद्ध का कहना है कि शील, सदाचार से अपने साथ–साथ दूसरों का भी कल्याण अनिवार्य रूप से होता है। यदि मनुष्य का कल्याण हो रहा है तो समाज का भी कल्याण होगा। सामाजिक, आर्थिक समस्याएँ गरीबी, भुखमरी, रोगों से लड़ने में एकदूसरे की सहायता करेंगे। व्यक्ति का कोई स्वतंत्र अस्तित्व नहीं होता, वह बहुत से वस्तुओं के लिए दूसरों पर निर्भर रहता है। व्यक्ति और समाज की पारस्परिक निर्भरता अपनी और दूसरों की पारस्परिक निर्भरता को एक दूसरे की सहायता से समझा जा सकता है। इस प्रकार बुद्ध ने मानव जीवन और उसके

आस–पास के वातावरण से संबंधित हर पहलू का विवेचन किया और उपदेश दिया। बुद्ध के विचार की प्रासंगिकता आज पहले से अधिक है।

संदर्भ ग्रंथ सूची–

1. भगवान बुद्ध धम्म–सार व धम्म–चर्या, आनंद श्रीकृष्ण, प्रथम संस्करण, 2001, समृद्ध भारत प्रकाशन, मुंबई।

सरदार ज्योति
प्राध्यापिका
शासकीय महिला महाविद्यालय,
संगारेड्डी